समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग : कैलाश सत्यार्थी

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन 'यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन' का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर 'ूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई।

30 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर, 2023 तक विराटनगर, राजस्थान में आयोजित इस 3 दिवसीय समारोह का उद्देश्य समाज में परोपकार यानी कम्पैशन की भावना को जागृत करना है। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, 'दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।' जायद अवार्ड फॉर 'ूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने 'ूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, 'कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।'

पहले युवा शिखर सम्मेलन युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) और जायद अवार्ड्स फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी (जेडएएचएफ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित युवा शिखर सम्मेलन युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन के पहले आयोजन के दौरान 500 से अधिक युवा नेताओं ने कम्पैशन इन एक्शन मुहिम के लिए एक प्रारूप तैयार किया। इस सम्मलेन का आयोजन 30 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023 तक राजस्थान के विराटनगर में किया गया था। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना और उन्हें कम्पैशन जैसे विषय पर चर्चा के लिए प्रेरित करना था। साथ ही इसका उद्देश्य दुनिया को बेहतर बनाने के लिए करुणा को अपनाने के प्रति लोगों की प्रतिबद्धता को मजबूत करना भी था। इस दौरान करुणा को नीति निर्माण में शामिल करके इसके वैश्वीकरण पर विशेष जोर दिया गया। इस पहले शिखर सम्मेलन ने विभिन्न समूहों, संस्कृतियों और विश्वास के बीच एकता को बढ़ावा दिया, जो हम सभी को एक सूत्र में बांधने वाली मानवता को रेखांकित करता है।

भास्कर खास • युवा शिखर सम्मेलन-2023, पहली बार समाज में करुणा की भावना जागृत करने एकत्रित हुए हैं युवा

समाज में करुणा की भावना जागृत करना समय की मांग : सत्यार्थी

भास्कर न्यूज़ | विराट नगर (जयपुर)

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करने के लिए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि इस बारे में बात हमेशा से होती आई है, लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। सत्यार्थी ने यह बात सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) द्वारा आयोजित पहले युवा शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कही। सम्मेलन का विषय 'विश्व बंधुत्व और करुणा' था। उन्होंने कहा कि पहली बार समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

खीरी बनेगा पहला चाइल्ड एंड वूमेन फ्रेंडली जिला

पूर्व सांसद रवि प्रकाश वर्मा ने कहा कि उत्तरप्रदेश का खीरी लखीमपुर जिला देश का पहला चाइल्ड एंड वूमेन फ्रेंडली जिला बनने जा रहा है। शहीद भगत सिंह सेवा दल के संस्थापक पद्मश्री जितेंद्र सिंह शंटी ने कहा कि समाज सेवा से बढ़कर दुनिया में कोई चीज नहीं है।

नोबल शांति पुरस्कार विजेता गॉबी का भी हुआ संबोधन

लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपने अनुभव साझा किए। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई।

‘समाज में करुणा की भावना जागृत करना समय की मांग’

भास्कर न्यूज | विराट नगर (जयपुर)

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करने के लिए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि इस बारे में बात हमेशा से होती आई है, लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। सत्यार्थी ने यह बात सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) द्वारा आयोजित पहले युवा शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कही। सम्मेलन का विषय ‘विश्व बंधुत्व और करुणा’ था। उन्होंने कहा कि पहली बार समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

खीरी बनेगा पहला चाइल्ड एंड वूमेन फ्रेंडली जिला

पूर्व सांसद रवि प्रकाश वर्मा ने कहा कि उत्तरप्रदेश का खीरी लखीमपुर जिला देश का पहला चाइल्ड एंड वूमेन फ्रेंडली जिला बनने जा रहा है। शहीद भगत सिंह सेवा दल के संस्थापक पद्मश्री जितेंद्र सिंह शंटी ने कहा कि समाज सेवा से बढ़कर दुनिया में कोई चीज नहीं है।

नोबल शांति पुरस्कार विजेता गॉबी का भी हुआ संबोधन

लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई।

Mon, 02 October 2023
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/73577930

पहले युवा शिखर सम्मेलन "युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन" में वैश्विक युवा नेताओं ने #GlobaliseCompassion को एक आंदोलन का रूप देने के लिए 850 से अधिक एक्शन पॉइंट्स की संकल्पना की

ये एक्शन पॉइंट्स भाईचारा के लिए करुणा को बढ़ाने की दिशा में हैं, जिसका लक्ष्य एक समावेशी समाज का निर्माण करना है।

दिलीप देवतवाल, दिल्ली

सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) और जायद अवार्ड्स फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी (जेडएएचएफ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित युवा शिखर सम्मेलन ₹युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन₹ के पहले आयोजन के दौरान 500 से अधिक युवा नेताओं ने कम्पैशन इन एक्शन मुहिम के लिए एक प्रारूप तैयार किया। इस सम्मलेन का आयोजन 30 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023 तक राजस्थान के विराटनगर में किया गया था।इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना और उन्हें कम्पैशन जैसे विषय पर चर्चा के लिए प्रेरित करना था। साथ ही इसका उद्देश्य दुनिया को बेहतर बनाने के लिए करुणा को अपनाने के प्रति लोगों की प्रतिबद्धता को मजबूत करना भी था। इस दौरान करुणा को नीति निर्माण में शामिल करके इसके वैश्वीकरण पर विशेष जोर दिया गया। इस पहले शिखर सम्मेलन ने विभिन्न समूहों, संस्कृतियों और विश्वास के बीच एकता को बढ़ावा दिया, जो हम सभी को एक सूत्र में बांधने वाली मानवता को रेखांकित करता है।सम्मलेन के दौरान, एक अंतरधार्मिक संवाद में सभी प्रमुख धार्मिक समूहों और संप्रदायों के नेताओं की भागीदारी भी देखी गई। इस दौरान एक अधिक सहिष्णु और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने के लिए करुणा के महत्व और इन नेताओं द्वारा करुणापूर्ण नेतृत्व पर चर्चा की गई, जो धर्म की तुलना में मानवता पर अधिक जोर देता हो।

प्रतिभागियों ने कहा कि प्रेम, दया, सहानुभूति और समानता करुणा के मूल में हैं। सामाजिक आर्थिक स्थिति, जाति, लिंग या धार्मिक पूर्वाग्रह में फंसे बिना समावेशिता के महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने लोगों की पीड़ा को कम करने और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए कम्पैशनेट एक्शन की आवश्यकता पर बल दिया।इन युवा नेताओं ने भाईचारा को बढ़ावा देने और करुणा की भावना को जागृत करने के प्रति अपनी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने करुणा के वैश्वीकरण और अपने समुदाय में दूसरों के लिए एक्शनेबल कम्पैशन पैदा करने के लिए विशेष प्रतिबद्धताएँ व्यक्त कीं।सम्मलेन के दौरान कुल मिलाकर, 875 विभिन्न कम्पैशनेट एक्शन पॉइंट्स पर सहमति बनी, जिसमें लोगों में स्कूलों में करुणापूर्ण कार्य, बाल मित्र ग्राम (बीजीएम) व बाल मित्र मंडल (बीएमएम) के उपयोग और पंचायतों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाना शामिल है। साथ ही, समुदाय के भीतर और बाहर कम्पैशन एक्शन विकसित करना भी शामिल है। इसके अलावा, बाल दिवस (14 नवंबर) और विभिन्न त्योहारों पर न केवल मनुष्यों के लिए बल्कि पारिस्थितिकी को बचाने के लिए भी करुणा का संदेश फैलाना शामिल है।

विश्व में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए, करुणा का एक मार्गदर्शक शक्ति होने के संदेश के साथ शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ।

● इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में युवा नेताओं ने कम्पैशन की पहचान एक मार्गदर्शक शक्ति के रूप में की, जिससे एक सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण संभव है।

● 500 से अधिक युवा नेताओं ने अपने समुदाय में दूसरों के लिए कम्पैशनेट एक्शन के लिए विशिष्ट प्रतिबद्धताएं व्यक्त की।

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी ने इस भावना को दोहराया और कहा, "करुणा सिर्फ एक सॉफ्ट पावर नहीं है। यह वह चिंगारी हो सकती है जिसमें दुनिया को एक साथ जोड़ने और एक उज्जवल भविष्य बनाने की शक्ति है।"एसएमजीसी दुनिया भर में 'कम्पैशन इन एक्शन' की भावना जगाने के लिए एक वैश्विक आंदोलन है। इसका जन्म कैलाश सत्यार्थी के चार दशकों के क्रांतिकारी जीवन और एक समाज सुधारक के रूप में उनके समर्पित प्रयासों से हुआ है।एसएमजीसी शिक्षा से लेकर व्यवसाय और सरकार तक समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देने के लिए काम करेगा। साथ ही, यह विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच सदभाव और दुनिया भर में शांति और समझ को बढ़ावा देने के लिए भी काम करेगा।

ज़याद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एक स्वतंत्र वैश्विक पुरस्कार है जो समाज में विभाजन को पाटने और मानवीय संबंध को मजबूत करने वाले व्यक्तियों और संस्थानों को प्रदान किया जाता है। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर प्रदान करने वाला यह पुरस्कार कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के संयोजन में प्रति वर्ष 4 फरवरी को आयोजित किया जाता है।

एशियन गेम्स में पुरुषों के + 92 भारवर्ग के सेमीफाइनल में पहुंचे बॉक्सर नरेंद्र, पदक किया पक्का...

सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

दिल्ली, एनसीआर, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार से प्रसारित

दिल्ली और दिल्ली

Website : delhiaurdelhi.com

वर्ष 16 | अंक 14 | नई दिल्ली | 01 अक्टूबर 2023 | मूल्य ₹5.00 | पेज 08 | RNI DELHIN/ 2006 /17504 | DAVP : ID No.1/292008-MUC

कनाडा में जो घटनाएं हो रही हैं उन्हें सामान्य न समझें: अमेरिका में विदेश मंत्री एस जयशंकर...

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग" नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

दिलीप देवतवाल, नई दिल्ली

30 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर, 2023 तक विराटनगर, राजस्थान में आयोजित इस 3 दिवसीय समारोह का उद्देश्य समाज में परोपकार यानी कम्पैशन की भावना को जागृत करना है। Viratnagar / New Delhi 30 September 2023: सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन ₹यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन₹ का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, "दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।"

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, "कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।"

लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था।

यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव

भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।

एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है।

ह्यूमन फ्रेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस (International Day of Human Fraternity) के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

देशबन्धु
Influencing Public Opinion Since 1959
04 Oct 2023 - Page 10

एसएमजीसी व जेडएएचएफ द्वारा युवा शिखर सम्मेलन में प्रारूप तैयार किया

नई दिल्ली 3 अक्टूबर (एजेंसियां)। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) और जायद अवार्ड्स फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी (जेडएएचएफ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित युवा शिखर सम्मेलन 'युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्टर्निटी एंड कम्पैशन' के पहले आयोजन के दौरान 500 से अधिक युवा नेताओं ने कम्पैशन इन एक्शन मुहिम के लिए एक प्रारूप तैयार किया। इस सम्मलेन का आयोजन 30 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023 तक राजस्थान के विराटनगर में किया गया था। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना और उन्हें कम्पैशन जैसे विषय पर चर्चा के लिए प्रेरित करना था। साथ ही इसका उद्देश्य दुनिया को बेहतर बनाने के लिए करुणा को अपनाने के प्रति लोगों की प्रतिबद्धता को मजबूत करना भी था। इस दौरान करुणा को नीति निर्माण में शामिल करके इसके वैश्वीकरण पर विशेष जोर दिया गया। इस पहले शिखर सम्मेलन ने विभिन्न समूहों, संस्कृतियों और विश्वास के बीच एकता को बढ़ावा दिया, जो हम सभी को एक सूत्र में बांधने वाली मानवता को रेखांकित करता है। सम्मलेन के दौरान, एक अंतरधार्मिक संवाद में सभी प्रमुख धार्मिक समूहों और संप्रदायों के नेताओं की भागीदारी भी देखी गई।

देशबन्धु
Influencing Public Opinion Since 1959
01 Oct 2023 - Page 10

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग : कैलाश सत्यार्थी

नई दिल्ली, 30 सितम्बर (एजेंसियां)। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन 'यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन' का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, 'दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।' जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, 'कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।' लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है।

'समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग' नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

30 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर, 2023 तक विराटनगर, राजस्थान में आयोजित इस 3 दिवसीय समारोह का उद्देश्य समाज में परोपकार यानी कम्पैशन की भावना को जागृत करना है।

दैनिक अधिकार/जयपुर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णयकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है। एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

30 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर, 2023 तक विराटनगर, राजस्थान में आयोजित इस 3 दिवसीय समारोह का उद्देश्य समाज में परोपकार यानी कम्पैशन की भावना को जागृत करना है

बढ़ती दुनिया

जयपुर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन ÷यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्टर्निटी एंड कम्पैशन÷ का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, ÷दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंने बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था।

यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।

एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है।

ह्यूमन फेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस (International Day of Human Fraternity) के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

'समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग'
नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आव्हान

बिज़नेस रेमेडीज/जयपुर

सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन 'यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन' का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया।

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा कि दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के

कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।÷

लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।

एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है।

ह्यूमन फ्रेंटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रैटर्निटी एंड कम्पैशन में अलग-अलग क्षेत्रों से 600 यूथ लीडर आए

गरीब बच्चों के प्रति बनी धारणा के खिलाफ आवाज बुलंद की, युवाओं की एकजुटता बनी ताकत : सत्यार्थी

सिटी रिपोर्टर | सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन ने दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। मौका था 'यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रैटर्निटी एंड कम्पैशन' के उद्घाटन समारोह का। इसमें देश-दुनिया के अलग-अलग क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स ने हिस्सा लिया।

विराटनगर के एक रिसोर्ट में आयोजित इस तीन दिवसीय समारोह में अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने कहा कि दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे इतने युवा एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है, लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस ऐतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। स्कूल के बाहर बैठे एक गरीब मोची के बच्चे की कहानी सुनाते हुए सत्यार्थी ने बताया कि जब उन्होंने उस बच्चे के हक के लिए आवाज उठानी चाही तो उनको यह कह कर चुप करा दिया गया कि गरीब का बच्चा इसी काम के लिए पैदा होता है। इससे प्रेरणा लेकर सत्यार्थी ने ठान लिया कि देश की यह सोच बदलनी है कि जो सदियों से कहा जा रहा वही ईश्वर का न्याय है। तभी से उन्होंने चाइल्ड लेबर और चाइल्ड एजुकेशन पर आवाज उठाना और उनके लिए काम करना शुरू कर दिया।

युवा महोत्सव में नोबेल पुरस्कार विजेता सत्यार्थी ने शेयर किए अनुभव

छह साल की उम्र में मिली बच्चों के लिए समान अधिकार की प्रेरणा : सत्यार्थी

नवज्योति, जयपुर। नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने कहा कि छह साल की उम्र में पहली बार स्कूल जाते समय उन्हें बच्चों के लिए समान अधिकार के लिए काम करने की प्रेरणा मिली थी। स्कूल के बाहर बैठे एक बच्चे को जूते पॉलिश करते देख मुझे बहुत दुख हुआ। मुझे अहसास था कि ईश्वर नहीं समाज ने असमानता की यह लकीर खींची है। फिर मैंने सदियों से चली आ रही इस वर्ग भेद की लकीर को मिटाने का काम शुरू किया। इसके लिए मैंने अपने दिल की सुनी और इलेक्ट्रिक इंजीनियर के तौर पर अपनी नौकरी छोड़ पूरी तरह से इस कोशिश को हकीकत में बदलने में लग गया। मेरे लिए यह आसान नहीं था, क्योंकि मैं बहुत संपन्न परिवार में पैदा नहीं हुआ था। मैंने इस कोशिश में तीन साथियों को खोया है। मेरे परिवार और मुझ पर कई माफियाओं ने हमले किए, लेकिन मैं अपने रास्ते से भटका नहीं। सत्यार्थी ने कहा कि आज हमारे समाज में करुणा और परोपकार की भावना जागृत करना ही समय की मांग है। शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने इन्हीं शब्दों के साथ विराटनगर में 30 सितंबर से 2 अक्टूबर के बीच शुरू हुए तीन दिवसीय सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन के तहत पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फर्टिनिटी एंड कम्पैशन्य के उद्घाटन मौके ये बातें कहीं। जायद अवॉर्ड फॉर ह्यूमन फर्टिनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में विभिन्न देशों और देश के करीब 600 यूथ लीडर्स ने समारोह में अपने संघर्ष और बदलाव की कहानी सुनाई।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग, नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

■ दिव्य राष्ट्र

विराटनगर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन ''यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन'' का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, ''दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे

करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, ''कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई।

उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है। एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है। ह्यूमन फ्रेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्त्व दिवस के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

जयपुर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी नें कहा, दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।

लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था।

यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।

एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है। ह्यूमन फेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं।

YOUTH SUMMIT

Satyarthi Movement for Global Compassion (SMGC) has launched the first-ever three-day Youth Summit on Human Fraternity and Compassion in Rajasthan from Saturday onwards with a clarion call to globalise compassion and bring positive changes in the world. The summit, in which over 600 youth leaders from different parts of India and the world are participating, is being held in partnership with the Zayed Award for Human Fraternity. "For the first time in the world, 500-600 youth have gathered under one roof for global compassion," said Nobel Laureate Kailash Satyarthi.

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग' नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

नई दिल्ली। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी नें कहा, ÷दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, ÷कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है।

समाज में करुणा भाव जगाना समय की मांग: कैलाश सत्यार्थी

विराटनगर में 600 यूथ लीडर्स ने युवा शिखर सम्मेलन में लिया हिस्सा

इंडिया न्यूज

जयपुर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) के पहले युवा शिखर सम्मेलन "यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन" का उद्घाटन 30 सितंबर को विराटनगर में हुआ। इसमें देश-दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने कहा कि दुनिया में पहली बार समाज में करुणा की भावना जागृत करने के लिए युवा आज एक छत के नीचे एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है, लेकिन इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है।

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश मोहम्मद अब्देल सलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। इस मौके पर लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंने बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग : नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी

■ जयदीप मित्र, नई दिल्ली

सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने शनिवार को विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन 'यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रंटर्निटी एंड कम्पैशन' का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश-दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स ने अपनी भागीदारी दर्ज कराई।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने कहा कि दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500- 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस ऐतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंने बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था।

यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्मायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।

एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है।

‘समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग’

विराटनगर में 2 अक्टूबर तक चलने वाले युवा शिखर सम्मेलन का उद्घाटन

मॉर्निंग न्यूज @विराटनगर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने शनिवार से विराटनगर में अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन ‘यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी एंड कम्पैशन’ का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित समारोह में देश दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स ने अपनी भागीदारी दर्ज कराई।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा कि दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500-600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है, लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।

लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंने बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लेखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है।

ह्यूमन फ्रेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतरराष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

'समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग'

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

विराटनगर (मृदुल पत्रिका)। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन ÷यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन÷ का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी नें कहा, ÷दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई

है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।÷ जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, ÷कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।÷ लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है। एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए।

विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है। ह्यूमन फेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग
नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

30 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर, 2023 तक विराटनगर, राजस्थान में आयोजित इस 3 दिवसीय समारोह का उद्देश्य समाज में परोपकार यानी कम्पैशन की भावना को जागृत करना है

ओम एक्सप्रेस

जयपुर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन ÷यूथ समिट फॉर ह्यूमन फटर्निटी एंड कम्पैशन÷ का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी नें कहा, दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 -600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंने बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था।

यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है। एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है। ह्यूमन फ्रेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

जयपुर (कासं)। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन 'यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन' का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश-दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500- 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई।

पश्चिम रेलवे - वडोदरा मंडल

रोड अंडर ब्रिज का प्रावधान

ई-निविदा सूचना सं.

DRM-BRC 085 OF 2023-24

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए मंडल रेल प्रबंधक (W A/C.), पश्चिम रेलवे, प्रतापनगर, वडोदरा-390 004 द्वारा निम्नानुसार कार्यों हेतु मुहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। **क्रम सं.1: निविदा सं. DRM BRC 085 of 2023-24 कार्य का नाम:** वडोदरा-गेरतपुर अनुभाग: DEN उत्तर के अधिकारक्षेत्र के आधिन विभिन्न समपार फाटकों पर रोड अंडर ब्रिज (RUB) के प्रावधान द्वारा वर्तमान के समपार फाटक को हटाने का कार्य। **कार्य की अनुमानित लागत (₹ में):** 35,05,92,964.82, **जमा कराने की बीड सुरक्षा राशी (₹ में):** 19,03,000.00, **निविदा जमा कराने एवं निविदा खोलने की तिथि एवं समय:** निविदा दिनांक **19-10-2023** को 15:00 बजे से पहले जमा की जाएगी एवं उसी दिनांक को 15:30 बजे खोली जाएगी। **वेबसाईट का विवरण एवं नोटीस का स्थान जहाँ से विवरण देखे जा सकते हैं एवं कार्यालय का पता जहाँ से निविदा प्रपत्र खरीद सकते हैं:** वेबसाईट: **@ www.ireps.gov.in** मंडल रेल प्रबंधक (W A/C), पश्चिम रेलवे, प्रतापनगर, वडोदरा-4।

BRC-185

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

'समाज में करुणा की भावना जागृत कर बदलाव लाना ही समय की मांग'

जयपुर, 30 सितंबर (ब्यूरो): नोबल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने शुक्रवार को सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) की ओर से विराटनगर में आयोजित युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रेटर्निटी एंड कम्पैशन का शुभारंभ करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में विभिन्न देशो से आए 600 यूथ लीडर्स ने भागीदारी दर्ज कराई।

इस अवसर पर सत्यर्थी ने कहा

कि दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए युवा एकत्र हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है, लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। वहीं जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देल सलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे।

विराट नगर में आयोजित युवा महोत्सव

ईश्वर ने नहीं समाज ने असमानता की लकीर खींची है: सत्यार्थी

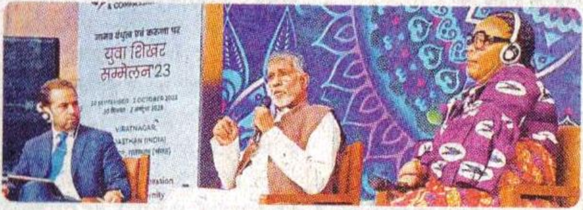

जयपुर @ पत्रिका. 'आज हमारे समाज में करुणा और परोपकार की भावना जागृत करना ही समय की मांग है। सकारात्मक रूप से सामाजिक बदलाव लाने के लिए यह बहुत जरूरी है।' 2014 के शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने इन्हीं शब्दों के साथ युवाओं का आह्वान किया। अवसर था विराटनगर में 30 सितंबर से 2 अक्टूबर के बीच आयोजित हो रही तीन दिवसीय सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन के तहत पहले युवा शिखर सम्मेलन 'यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन' के उद्घाटन का। जायद अवॉर्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में विभिन्न देशों से आए करीब 600 यूथ लीडर्स ने संघर्ष और बदलाव की कहानी सुनाई। सत्यार्थी ने कहा कि छह साल की उम्र में पहली बार स्कूल जाते समय उन्हें बच्चों के लिए समान अधिकार के लिए काम करने की प्रेरणा मिली। स्कूल के बाहर बैठे एक बच्चे को जूते पॉलिश करते देख मुझे अहसास हुआ कि ईश्वर नहीं समाज ने असमानता की यह लकीर खींची है।

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग

जयपुर (सच कहूं न्यूज)। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन "यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन" का उद्घाटन करते हुए दुनियाभर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश-दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, "दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।"

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, "कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।"

लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।

एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है। ह्यूमन फ्रेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने युवाओं से किया

समाज में करुणा की भावना जागृत करने का आह्वान

जयपुर। (सफल राजस्थान) सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने शनिवार को विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया गया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी निभाई।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने कहा कि दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस ऐतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।

एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग, नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

■ संजीवनी टुडे

विराटनगर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन ''यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन'' का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, ''दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे

करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, ''कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई।

उन्होंनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है। एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है। ह्यूमन फ्रेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

Nobel Laureate Kailash Satyarthi calls for Global Compassion in Action

New Delhi (Society News). Satyarthi Movement for Global Compassion (SMGC) has launched the first-ever Youth Summit on Human Fraternity and Compassion in Rajasthan today with a clarion call to globalise compassion and bring positive changes in the world. The summit, in which over 600 youth leaders from different parts of India and the world are participating, is being held in partnership withthe Zayed Award for Human Fraternity. "For the first time in the world, 500-600 youth have gathered under one roof for global compassion,"said Nobel Laureate Kailash Satyarthi. "Compassion has always been talked about but today it has become a need due to fissures within society and fractures in the world. Those who have gathered here today are part of history for this movement of globalising compassion."

Acknowledging his sentiment, Judge Mohamed Abdelsalam, Secretary-General of the Zayed Award for Human Fraternity, stated a need to establish a link between human fraternity and compassion. He said, "No human being is born with enmity, nor with any innate discrimination and hatred. All religions in the world call for compassion."

Liberia's 2011 Nobel Peace Prize winner, Leymah Gbowee narrated her own experience and story on compassion when a former child soldier showed her a peaceful and compassionate way to get justice when her village was destroyed. The inaugural Youth Summit of Human Fraternity and Compassion is a 3-day event, being held at Viratnagar, Rajasthan from September 30th to October 2nd, 2023. The summit brings together global thought leaders, youth influencers, pioneers of human fraternity, religious leaders, decision-makers, and change agents. In a spirit of engagement, diverse voices will exchange ideas and discuss pathways to heal an increasingly fractured world, guided by the tenets of the Document on Human Fraternity to globalise compassion.

INSPIRING

YOUTH SUMMIT PROMOTES HUMAN FRATERNITY AND COMPASSION

TDG NETWORK
JAIPUR

The Satyarthi Movement for Global Campaign (SMGC) inaugurated the first Youth Summit "Youth Summit for Human Fraternity and Compassion" in Viratnagar. In this, 600 youth leaders from various fields of the country and the world participated.

On this occasion, Nobel laureate Kailash Satyarthi said, "Today, for the first time in the world, young people have come together under one roof to awaken the feeling of compassion in society. This issue has always been there, but due to the social issues and divisions emerging worldwide, it has become a necessity. The people gathered here today are part of this historic global movement of compassion."

The Secretary-General of the Jaideep Award for Human Fraternity, Justice Mohamed Abdel Salam, emphasized the need to establish a relationship between Human Fraternity and Compassion. He said, "No one is born with feelings of enmity, discrimination, and hatred in their mind. All religions in the world talk about altruism."

Nobel laureate launches 1st global youth summit in Raj

Times News Network

Jaipur: Satyarthi Movement for Global Compassion (SMGC) has launched the first-ever Youth Summit on Human Fraternity and Compassion in Rajasthan on Saturday with an aim to globalise compassion and bring positive changes in the world.

The summit, in which over 600 youth leaders from different parts of India and the world are participating, is being held in partnership with the Zayed Award for Human Fraternity.

"Those who have gathered here today are part of history for this movement of globalising compassion," said Nobel Laureate Kailash Satyarthi.

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

जयपुर,(उदय टुडे)। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था।यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है। एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है।ह्यूमन फ्रेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

30 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर 2023 तक विराटनगर राजस्थान में आयोजित

वीर अर्जुन संवाददाता

जयपुर। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन एसएमजीसी ने आज विराटनगर मेंए अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश -दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा कि दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 -600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा किए कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही समय की मांग'

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

विशेष गरिमा

जयपुर। राजस्थान सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन ÷यूथ समिट फॉर ह्यूमन फटर्निटी एंड कम्पैशन÷ का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी नें कहा, ÷दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।÷ जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, ÷कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं। लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज़ होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है। एसएमजीसी एक विश्वव्यापी आंदोलन है जो एक समाज सुधारक के रूप में कैलाश सत्यार्थी के दशकों लंबे काम से प्रेरित है। इसका मिशन शिक्षा, व्यवसाय और सरकार सहित समाज के सभी क्षेत्रों में करुणा की भावना को बढ़ावा देना है। साथ ही, दुनिया भर में शांति और आपसी समझ को आगे बढ़ाते हुए विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देना है। ह्यूमन फेटरनिटी के लिए जायद पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है जो उन व्यक्तियों और संस्थानों को सम्मानित करता है जो सामाजिक दूरियों को पाटते हैं और मानवीय संबंधों को मजबूत करते हैं। 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का यह मौद्रिक पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के अंतर्गत प्रतिवर्ष 4 फरवरी को प्रदान किया जाता है।

#GlobaliseCompassion को एक आंदोलन का रूप देने के लिए 850 से अधिक एक्शन पॉइंट्स की संकल्पना की

ओपन सर्च. संवाददाता

नई दिल्ली। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) और जायद अवार्ड्स फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी (जेडएएचएफ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित युवा शिखर सम्मेलन 'युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन' के पहले आयोजन के दौरान 500 से अधिक युवा नेताओं ने कम्पैशन इन एक्शन मुहिम के लिए एक प्रारूप तैयार किया। इस सम्मलेन का आयोजन 30 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023 तक राजस्थान के विराटनगर में किया गया था। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना और उन्हें कम्पैशन जैसे विषय पर चर्चा के लिए प्रेरित करना था। साथ ही इसका उद्देश्य दुनिया को बेहतर बनाने के लिए करुणा को अपनाने के प्रति लोगों की प्रतिबद्धता को मजबूत करना भी था। इस दौरान करुणा को नीति निर्माण में शामिल करके इसके वैश्वीकरण पर विशेष जोर दिया गया। इस पहले शिखर सम्मेलन ने विभिन्न समूहों, संस्कृतियों और विश्वास के बीच एकता को बढ़ावा दिया, जो हम सभी को एक सूत्र में बांधने वाली मानवता को रेखांकित करता है।

सम्मलेन के दौरान, एक अंतरधार्मिक संवाद में सभी प्रमुख धार्मिक समूहों और संप्रदायों के नेताओं की भागीदारी भी देखी गई। इस दौरान एक अधिक सहिष्णु और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने के लिए करुणा के महत्व और इन नेताओं द्वारा करुणापूर्ण नेतृत्व पर चर्चा की गई, जो धर्म की तुलना में मानवता पर अधिक जोर देता हो। प्रतिभागियों ने कहा कि प्रेम, दया, सहानुभूति और समानता करुणा के मूल में हैं। सामाजिक आर्थिक स्थिति, जाति, लिंग या धार्मिक पूर्वाग्रह में फंसे बिना समावेशिता के महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने लोगों की पीड़ा को कम करने और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए कम्पैशनेट एक्शन की आवश्यकता पर बल दिया। इन युवा नेताओं ने भाईचारा को बढ़ावा देने और करुणा की भावना को जागृत करने के प्रति अपनी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने करुणा के वैश्वीकरण और अपने समुदाय में दूसरों के लिए एक्शनेबल कम्पैशन पैदा करने के लिए विशेष प्रतिबद्धताएँ व्यक्त कीं। सम्मलेन के दौरान कुल मिलाकर, 875 विभिन्न कम्पैशनेट एक्शन पॉइंट्स पर सहमति बनी, जिसमें लोगों में स्कूलों में करुणापूर्ण कार्य, बाल मित्र ग्राम (बीजीएम) व बाल मित्र मंडल (बीएमएम) के उपयोग और पंचायतों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाना शामिल है। साथ ही, समुदाय के भीतर और बाहर कम्पैशन एक्शन विकसित करना भी शामिल है। इसके अलावा, बाल दिवस (14 नवंबर) और विभिन्न त्योहारों पर न केवल मनुष्यों के लिए बल्कि पारिस्थितिकी को बचाने के लिए भी करुणा का संदेश फैलाना शामिल है। विश्व में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए, करुणा का एक मार्गदर्शक शक्ति होने के संदेश के साथ शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ। नोबेल शांति पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी ने इस भावना को दोहराया और कहा, करुणा सिर्फ एक सॉफ्ट पावर नहीं है।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांग: कैलाश सत्यार्थी

गुड़गांव, 30 सितम्बर (ब्यूरो): सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन ने विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। 30 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर, 2023 तक विराटनगर, राजस्थान में आयोजित इस 3 दिवसीय समारोह का उद्देश्य समाज में परोपकार यानी कम्पैशन की भावना को जागृत करना है। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।

पहला युवा शिखर सम्मेलन युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन हुआ संपन्न

गुड़गांव, 3 अक्तूबर (ब्यूरो): सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन और जायद अवार्ड्स फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित युवा शिखर सम्मेलन युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन संपन्न हुआ। पहले आयोजन के दौरान 500 से अधिक युवा नेताओं ने कम्पैशन इन एक्शन मुहिम के लिए एक प्रारूप तैयार किया। इस सम्मलेन का आयोजन 30 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023 तक राजस्थान के विराटनगर में किया गया था। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना और उन्हें कम्पैशन जैसे विषय पर चर्चा के लिए प्रेरित करना था। साथ ही इसका उद्देश्य दुनिया को बेहतर बनाने के लिए करुणा को अपनाने के प्रति लोगों की प्रतिबद्धता को मजबूत करना भी था। इस दौरान करुणा को नीति निर्माण में शामिल करके इसके वैश्वीकरण पर विशेष जोर दिया गया। इस पहले शिखर सम्मेलन ने विभिन्न समूहों, संस्कृतियों और विश्वास के बीच एकता को बढ़ावा दिया, जो हम सभी को एक सूत्र में बांधने वाली मानवता को रेखांकित करता है। सम्मलेन के दौरान, एक अंतरधार्मिक संवाद में सभी प्रमुख धार्मिक समूहों और संप्रदायों के नेताओं की भागीदारी भी देखी गई। इस दौरान एक अधिक सहिष्णु और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने के लिए करुणा के महत्व और इन नेताओं द्वारा करुणापूर्ण नेतृत्व पर चर्चा की गई।

समाज में करुणा की भावना जागृत करना ही है समय की मांगः नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का युवाओं से आह्वान

नई दिल्ली। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन "यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन" का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई।30 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर, 2023 तक विराटनगर, राजस्थान में आयोजित इस 3 दिवसीय समारोह का उद्देश्य समाज में परोपकार यानी कम्पैशन की भावना को जागृत करना है।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यर्थी नें कहा, "दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बा7रे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं।"

जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्देलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, "कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।"

लाइबेरिया की 2011 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, लेमाह गॉबी ने कम्पैशन पर अपना अनुभव साझा करते हुए एक कहानी सुनाई। उन्होंनें बताया कि कैसे एक पूर्व बाल सैनिक ने उन्हें न्याय पाने के लिए एक शांतिपूर्ण और दयालुता का रास्ता दिखाया, जब उनका गांव नष्ट हो गया था। यह शिखर सम्मेलन वैश्विक विचारकों, यूथ इंफ्लुएंसर, मानव भाईचारे के अग्रदूतों, धार्मिक नेताओं, निर्णायकों और चेंजमेकर्स को एक साथ लाता है। दुनिया भर के विविध क्षेत्रों से आए यह सभी लोग, सामाजिक मतभेदों को दूर कर सकारात्मक परिवर्तन लाने पर विचार विमर्श करेंगे। इस चर्चा का आधार ह्यूमन फ्रेटरनिटी पर आधारित एक दस्तावेज होगा। इसमें उल्लिखित सिद्धांतों का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर करुणा फैलाना है।

करुणा की भावना जागृत करना ही समय की मांग: कैलाश सत्यार्थी

नई दिल्ली। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) ने आज विराटनगर में, अपने पहले युवा शिखर सम्मेलन यूथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रेटर्निटी एंड कम्पैशन का उद्घाटन करते हुए दुनिया भर में परोपकार की भावना को जागृत करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान किया। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के सहयोग से आयोजित इस समारोह में देश - दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से आए 600 यूथ लीडर्स नें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी नें कहा, ध्दुनिया में पहली बार, समाज में करुणा की भावना को जागृत करने के लिए आज एक छत के नीचे 500 - 600 युवा यहां एकत्रित हुए हैं। इस बारे में बात हमेशा से होती आई है लेकिन दुनियाभर में उठ रहे इन सामाजिक मुद्दों और अलगाव के कारण यह एक आवश्यकता बन गई है। आज यहां जो लोग एकत्र हुए हैं वे करुणा के इस इतिहासिक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं। जायद अवार्ड फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी के महासचिव न्यायाधीश, मोहम्मद अब्दुलसलाम ने ह्यूमन फ्रेटरनिटी और कम्पैशन के बीच एक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि, कोई भी मनुष्य अपने मन में शत्रुता, भेदभाव और नफरत की भावना लेकर पैदा नहीं होता है। दुनिया के सभी धर्म परोपकार की बात करते हैं।

युवा शिखर सम्मेलन युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन सम्पन्न

नई दिल्ली। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पेशन (एसएमजीसी) और जायद अवाड्र्स फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी (जेडएएचएफ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित युवा शिखर सम्मेलन ष्युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशनष के पहले आयोजन के दौरान 500 से अधिक युवा नेताओं ने कम्पैशन इन एक्शन मुहिम के लिए एक प्रारूप तैयार किया। इस सम्मलेन का आयोजन 30 सितंबर से 2 अक्टूबर तक राजस्थान के विराटनगर में किया गया था। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना और उन्हें कम्पैशन जैसे विषय पर चर्चा के लिए प्रेरित करना था।

Satyarthi calls for 'global compassion in action'

SNS & AGENCIES

RAJASTHAN, 30 SEPTEMBER

A first-ever youth summit on 'Human Fraternity and Compassion' was launched in Rajasthan on Saturday in which Nobel Laureate Kailash Satyarthi, gave a clarion call to globalise compassion and bring positive changes in the world.

"For the first time in the world, 500-600 youth have gathered under one roof for global compassion," said Kailash Satyarthi.

"Compassion has always been talked about, but today it has become a need due to fissures within society and fractures in the world. Those who have gathered here today are part of history for this movement of globalising compassion."

The summit is launched by Satyarthi Movement for Global Compassion (SMGC) in partnership with the Zayed Award for Human Fraternity.

Youth Summit: The inaugural Youth Summit on Human Fraternity & Compassion, jointly hosted by the Satyarthi Movement for Global Compassion (SMGC) and the Zayed Awards for Human Fraternity (ZAHF), in Viratnagar, Rajasthan from 30 September to 2 October, witnessed the development of a framework for compassion in action by over 500 global youth leaders.

The Statesman
PEOPLE'S PARLIAMENT, ALWAYS IN SESSION

कम्पैशन इन एक्शन मुहिम के लिए प्रारूप तैयार किया

नई दिल्ली, (वीअ)। सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन (एसएमजीसी) और जायद अवाड्र्स फॉर ह्यूमन फ्रेटरनिटी (जेडएएचएफ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित युवा शिखर सम्मेलन युथ समिट फॉर ह्यूमन फ्रटर्निटी एंड कम्पैशन के पहले आयोजन के दौरान 500 से अधिक युवा नेताओं ने कम्पैशन इन एक्शन मुहिम के लिए एक प्रारूप तैयार किया। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना और उन्हें कम्पैशन जैसे विषय पर चर्चा के लिए प्रेरित करना था। साथ ही इसका उद्देश्य दुनिया को बेहतर बनाने के लिए करुणा को अपनाने के प्रति लोगों की प्रतिबद्धता को मजबूत करना भी था। इस दौरान करुणा को नीति निर्माण में शामिल करके इसके वैश्वीकरण पर विशेष जोर दिया गया। इस पहले शिखर सम्मेलन ने विभिन्न समूहों, संस्कृतियों और विश्वास के बीच एकता को बढ़ावा दिया, जो हम सभी को एक सूत्र में बांधने वाली मानवता को रेखांकित करता है।सम्मलेन के दौरान, एक अंतरधार्मिक संवाद में सभी प्रमुख धार्मिक समूहों और संप्रदायों के नेताओं की भागीदारी भी देखी गई। इस दौरान एक अधिक सहिष्णु और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने के लिए करुणा के महत्व और इन नेताओं द्वारा करुणापूर्ण नेतृत्व पर चर्चा की गई, जो धर्म की तुलना में मानवता पर अधिक जोर देता हो। प्रतिभागियों ने कहा कि प्रेम, दया, सहानुभूति और समानता करुणा के मूल में हैं।